Emperor Journal of Education

ISSN: 2583-0627 **Mayas Publication®** **www.mayas.info**

Volume-VI **Issue-V** **May 2026**

पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन का चित्रण

शिखा पाण्डेय
शोधार्थी,
ललित कला विभाग,
तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद,
उत्तर प्रदेश.

डॉ. फरहा दीबा
एसोसिएट प्रोफेसर
ललित कला विभाग,
तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद,
उत्तर प्रदेश .

सार

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी का संक्रमणकाल भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। मुग़ल सत्ता के क्षय और ईस्ट इंडिया कंपनी के वाणिज्यिक-राजनीतिक विस्तार के साथ भारतीय समाज की अर्थव्यवस्था, व्यवसायिक संरचनाएँ और दैनिक जीवन की पद्धतियाँ तीव्र परिवर्तन के दौर से गुज़रीं। इसी ऐतिहासिक संदर्भ में विकसित हुई कंपनी चित्रकला केवल एक औपनिवेशिक कलात्मक शैली न रहकर, समकालीन भारतीय समाज की आर्थिक गतिविधियों और जीवन-अनुभवों का महत्त्वपूर्ण दृश्य अभिलेख बन गई।

यह शोध-पत्र पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार पटना की कंपनी चित्रशैली में स्थानीय श्रम, कारीगर समुदाय, छोटे स्तर

के व्यापार और साधारण जनजीवन को प्रत्यक्ष एवं वस्तुनिष्ठ रूप में चित्रित किया गया, जबकि मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला में दरबारी संरक्षण, रेशमी वस्त्र व्यापार, अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक नेटवर्क और अभिजात्य आर्थिक संरचना को प्रमुखता प्राप्त हुई। दोनों केंद्रों के चित्रों में विषय-वस्तु, शैली, तकनीक और प्रतीकात्मक संकेतों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं की भिन्न अभिव्यक्तियाँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं।

यह अध्ययन गुणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है, जिसमें दृश्य-विश्लेषण, आइकनोग्राफ़िक अध्ययन और ऐतिहासिक संदर्भों के समन्वय द्वारा चयनित चित्रकृतियों की विवेचना की गई है। तुलनात्मक दृष्टि से यह शोध स्थापित करता है कि कंपनी चित्रकला औपनिवेशिक भारत में व्यवसाय और व्यापार को केवल आर्थिक गतिविधियों के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की संरचना और श्रम-संस्कृति के दृश्य प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करती है। इस प्रकार, पटना और मुर्शिदाबाद की कंपनी पेंटिंग्स भारतीय सामाजिक-आर्थिक इतिहास के अध्ययन हेतु एक महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय दृश्य स्रोत के रूप में उभरती हैं।

कुंजी शब्द: कंपनी चित्रकला, पटना कलम, मुर्शिदाबाद चित्रशैली, दैनिक जीवन का चित्रण, औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था, कारीगर और श्रम-संस्कृति, बाज़ार और वाणिज्यिक गतिविधियाँ, दृश्य इतिहास, औपनिवेशिक कला और समाज

भूमिका

भारतीय चित्रकला की परंपरा आरंभ से ही समाज, संस्कृति और जीवन-पद्धतियों के साथ गहरे रूप में जुड़ी रही है। प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय चित्रकला में जहाँ धार्मिक, पौराणिक और दरबारी विषयों की प्रधानता दिखाई देती है, वहीं अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय समाज के राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में आए व्यापक परिवर्तनों ने कला के विषय और उद्देश्य दोनों को प्रभावित किया। ईस्ट इंडिया कंपनी के वाणिज्यिक और प्रशासनिक विस्तार के साथ एक नई चित्रण-परंपरा का विकास हुआ, जिसे आज “कंपनी चित्रकला” के नाम से जाना जाता है। इस शैली ने भारतीय जीवन के उन पक्षों को दृश्य रूप प्रदान किया, जिन्हें पहले कला के केंद्रीय विषय के रूप में अपेक्षाकृत कम स्थान मिला था—जैसे व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन।

कंपनी चित्रकला का उद्भव केवल कलात्मक प्रयोग का परिणाम नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक सत्ता, नए संरक्षक वर्ग और यूरोपीय दर्शकों की जिज्ञासा से गहराई से जुड़ा हुआ था। अंग्रेज़ अधिकारी, व्यापारी और यात्री भारतीय समाज की संरचना, उसकी आर्थिक गतिविधियों और जीवन-शैली को समझना और प्रलेखित करना चाहते थे। इसी आवश्यकता के अंतर्गत स्थानीय भारतीय कलाकारों ने ऐसे चित्र निर्मित किए, जिनमें बाज़ार, कारीगर, व्यापारी, परिवहन-प्रणालियाँ और रोज़मर्रा की सामाजिक गतिविधियाँ प्रमुख विषय बनकर उभरीं। इस प्रकार कंपनी चित्रकला एक ऐसी दृश्य भाषा के रूप में विकसित हुई, जो सौंदर्य के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक यथार्थ को भी अभिव्यक्त करती है।

भारत में कंपनी चित्रकला के अनेक केंद्र विकसित हुए, किंतु पटना और मुर्शिदाबाद इस परंपरा के दो अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र माने जाते हैं। पटना, जिसे "पटना कलम" के नाम से जाना जाता है, अपनी लोकजीवन-केन्द्रित दृष्टि के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध रहा। यहाँ के कलाकारों ने सामान्य जन, छोटे व्यवसायों, कारीगरों और स्थानीय बाज़ारों को अपने चित्रण का मुख्य विषय बनाया। इसके विपरीत, मुर्शिदाबाद—जो अठारहवीं शताब्दी में बंगाल की नवाबी राजधानी और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख केंद्र था—की कंपनी चित्रकला में दरबारी जीवन, रेशमी वस्त्र व्यापार, प्रशासनिक संरचना और अभिजात्य वर्ग की आर्थिक गतिविधियों का प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है। इस प्रकार दोनों केंद्रों की चित्रशैली उनके सामाजिक-आर्थिक परिवेश को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन का चित्रण कंपनी चित्रकला का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट पक्ष है। इन चित्रों में कारीगरों के औज़ार, व्यापारिक वस्तुएँ, बाज़ारों की संरचना, परिवहन के साधन और श्रम की प्रक्रियाएँ विस्तार से दिखाई देती हैं। ये दृश्य केवल कलात्मक रचनाएँ नहीं हैं, बल्कि उस समय की आर्थिक व्यवस्था, श्रम-विभाजन और सामाजिक संबंधों का प्रत्यक्ष साक्ष्य भी प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से कंपनी चित्रकला को औपनिवेशिक भारत के "दृश्य इतिहास" (Visual History) के रूप में देखा जा सकता है।

यद्यपि कंपनी चित्रकला पर अनेक कला-ऐतिहासिक और औपनिवेशिक अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु पटना और मुर्शिदाबाद के संदर्भ में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के चित्रण का तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित रहा है। अधिकांश अध्ययनों में या तो शैलीगत विश्लेषण पर बल दिया गया है या औपनिवेशिक दृष्टिकोण की आलोचना की गई है,

जबकि इन चित्रों में निहित सामाजिक-आर्थिक संकेतों को गहराई से समझने का प्रयास कम हुआ है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य इसी रिक्ति को भरना है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों के माध्यम से यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार औपनिवेशिक काल में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन को दृश्य रूप में अभिव्यक्त किया गया, और यह चित्रण उस समय के भारतीय समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचना को समझने में किस प्रकार सहायक है। इस प्रकार यह शोध कंपनी चित्रकला को केवल एक कलात्मक शैली के रूप में नहीं, बल्कि औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-आर्थिक इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्थापित करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में गहन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का काल रहा। 1757 ई. की प्लासी की लड़ाई और 1764 ई. की बक्सर की लड़ाई के पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा में अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस राजनीतिक परिवर्तन के साथ ही भारतीय समाज की पारंपरिक प्रशासनिक संरचनाओं, व्यापारिक प्रणालियों और सांस्कृतिक जीवन में व्यापक रूपांतरण आरंभ हुआ। मुग़ल सत्ता के क्षीण होते प्रभाव और नवाबी संरक्षकों की सीमित होती भूमिका के बीच कंपनी एक नए राजनीतिक और आर्थिक संरक्षक के रूप में उभरी।

इस काल में ईस्ट इंडिया कंपनी केवल एक व्यापारिक संस्था न रहकर एक प्रशासनिक शक्ति के रूप में कार्य करने लगी। कंपनी के अधिकारियों, व्यापारियों और यात्रियों की भारत में बढ़ती उपस्थिति ने भारतीय समाज, बाज़ार व्यवस्था और व्यवसायिक जीवन को समझने की एक नई आवश्यकता उत्पन्न की। यूरोपीय दृष्टि से भारत को जानने और वर्गीकृत करने की इस प्रक्रिया में दृश्य माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई। इसी संदर्भ में कंपनी चित्रकला का विकास हुआ, जिसने भारतीय जीवन के विविध पक्षों को प्रलेखित करने का कार्य किया।

कंपनी चित्रकला का ऐतिहासिक विकास पारंपरिक भारतीय लघुचित्र परंपरा और यूरोपीय यथार्थवादी दृष्टि के समन्वय से जुड़ा हुआ है। भारतीय कलाकारों ने मुग़लकालीन लघुचित्रों से प्राप्त रेखांकन-कुशलता और रंग-प्रयोग की परंपरा को बनाए रखा, जबकि यूरोपीय संरक्षकों की मांग पर परिप्रेक्ष्य, छायांकन और प्राकृतिक अवलोकन पर आधारित चित्रण को भी अपनाया। परिणामस्वरूप एक ऐसी संकर शैली विकसित हुई, जो भारतीय विषय-वस्तु को

यूरोपीय दर्शक के अनुकूल प्रस्तुत करती थी, परंतु जिसमें स्थानीय समाज और जीवन की वास्तविकताएँ भी समाहित थीं।

पटना और मुर्शिदाबाद इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के दो प्रमुख केंद्र बनकर उभरे। पटना अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था, जहाँ गंगा नदी के माध्यम से आंतरिक व्यापार, स्थानीय बाज़ार और कारीगर समुदाय सक्रिय थे। यहाँ विकसित हुई पटना कलम ने छोटे स्तर के व्यवसायों, श्रम-आधारित पेशों और साधारण जनजीवन को चित्रण का मुख्य विषय बनाया। यह चित्रण उस सामाजिक-आर्थिक संरचना को प्रतिबिंबित करता है, जिसमें स्थानीय उत्पादन, विनिमय और दैनिक श्रम की केंद्रीय भूमिका थी।

इसके विपरीत, मुर्शिदाबाद अठारहवीं शताब्दी में बंगाल की नवाबी राजधानी और अंतरराष्ट्रीय व्यापार का प्रमुख केंद्र था। रेशमी वस्त्र उद्योग, राजकीय संरक्षण और यूरोपीय व्यापारिक हितों ने इस नगर को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया। मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला में दरबारी जीवन, प्रशासनिक संरचनाएँ, व्यापारिक वैभव और अभिजात्य संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यहाँ के चित्रों में व्यापार और व्यवसाय का निरूपण अधिक व्यापक और औपचारिक रूप में किया गया, जो वैश्विक वाणिज्यिक नेटवर्क से जुड़े आर्थिक ढाँचे को इंगित करता है।

औपनिवेशिक काल की इन ऐतिहासिक परिस्थितियों में कंपनी चित्रकला ने केवल सौंदर्यपरक भूमिका ही नहीं निभाई, बल्कि एक दृश्य दस्तावेज़ के रूप में भी कार्य किया। इन चित्रों के माध्यम से भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों, उनके पेशों, व्यापारिक गतिविधियों और दैनिक जीवन की संरचनाओं को संरक्षित किया गया। इस प्रकार पटना और मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला न केवल कला-इतिहास की दृष्टि से, बल्कि औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-आर्थिक इतिहास को समझने के लिए भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत के रूप में उभरती है।

अठारहवीं शताब्दी की कंपनी चित्रकला में भारतीय कारीगरों और व्यवसायों का दृश्य निरूपण *(स्रोत: ब्रिटिश लाइब्रेरी संग्रह)*

शोध प्रश्न एवं उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का केंद्रीय फोकस पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि औपनिवेशिक काल में निर्मित कंपनी चित्रकला किस प्रकार भारतीय समाज की आर्थिक संरचनाओं, श्रम-प्रणालियों और जीवन-पद्धतियों को दृश्य रूप में अभिव्यक्त करती है। इस संदर्भ में निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है।

शोध प्रश्न :

1. पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में किस प्रकार के व्यवसाय, व्यापारिक गतिविधियाँ और दैनिक जीवन से जुड़े दृश्य प्रमुख रूप से चित्रित किए गए हैं?
2. दोनों केंद्रों की कंपनी चित्रकला में व्यवसाय और व्यापार के चित्रण की विषय-वस्तु, शैली और प्रतीकात्मक प्रस्तुति में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ विद्यमान हैं?

3. इन चित्रों में श्रम-वर्ग, कारीगर समुदाय और व्यापारिक वर्ग की सामाजिक स्थिति को किस प्रकार निरूपित किया गया है?
4. पटना और मुर्शिदाबाद के भिन्न सामाजिक-आर्थिक परिवेश ने वहाँ की कंपनी चित्रशैली के विषय-चयन और चित्रण-पद्धति को किस प्रकार प्रभावित किया है?
5. क्या कंपनी चित्रों को औपनिवेशिक भारत के व्यवसाय और दैनिक जीवन के विश्वसनीय दृश्य स्रोत के रूप में देखा जा सकता है, और उनकी सीमाएँ क्या हैं?

शोध के उद्देश्य :

उपरोक्त शोध प्रश्नों के आलोक में इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन से संबंधित विषय-वस्तुओं की पहचान करना और उनका व्यवस्थित वर्गीकरण प्रस्तुत करना।
2. दोनों केंद्रों की कंपनी चित्रकला में व्यवसाय और व्यापार के चित्रण की शैलीगत विशेषताओं तथा दृश्य भाषा का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. कंपनी चित्रों के माध्यम से औपनिवेशिक काल की आर्थिक संरचना, श्रम-विभाजन और सामाजिक संबंधों को समझने का प्रयास करना।
4. यह मूल्यांकन करना कि किस प्रकार पटना की कंपनी चित्रशैली स्थानीय और लघु-स्तरीय व्यवसायों तथा साधारण जनजीवन पर केंद्रित रही, जबकि मुर्शिदाबाद की चित्रकला ने दरबारी संरक्षण और व्यापक व्यापारिक नेटवर्क को प्रमुखता प्रदान की।
5. कंपनी चित्रकला को औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-आर्थिक इतिहास के एक महत्वपूर्ण दृश्य दस्तावेज़ के रूप में स्थापित करना।

इस प्रकार, यह शोध-पत्र न केवल कंपनी चित्रकला के विषयगत और शैलीगत पक्षों को उजागर करता है, बल्कि उसे औपनिवेशिक काल की आर्थिक और सामाजिक वास्तविकताओं के अध्ययन के लिए एक सशक्त और विश्वसनीय स्रोत के रूप में भी प्रस्तुत करता है।

साहित्य समीक्षा

कंपनी चित्रकला पर उपलब्ध साहित्य मुख्यतः औपनिवेशिक कला, संरक्षकता और शैलीगत परिवर्तन के अध्ययन पर केंद्रित रहा है। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित इस चित्रण-परंपरा को प्रारंभिक विद्वानों ने भारतीय और यूरोपीय कला-शैलियों के संकर रूप के रूप में समझने का प्रयास किया। हालाँकि, व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में इन चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित रहा है। प्रस्तुत शोध इसी रिक्ति को ध्यान में रखते हुए साहित्य की आलोचनात्मक समीक्षा करता है।

(क) कंपनी चित्रकला पर सामान्य अध्ययन

कंपनी चित्रकला के अध्ययन में मिल्ड्रेड आर्चर और डब्ल्यू. जी. आर्चर के कार्यों को आधारभूत माना जाता है। आर्चर ने कंपनी चित्रों को औपनिवेशिक संरक्षण में विकसित एक विशिष्ट कला-धारा के रूप में परिभाषित किया और इनके विषय-वस्तु, शैली और संरक्षक वर्ग पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार कंपनी चित्रों में भारतीय कलाकारों ने यूरोपीय यथार्थवादी दृष्टि को अपनाते हुए स्थानीय विषयों का चित्रण किया। इन अध्ययनों में कंपनी चित्रकला को मुख्यतः औपनिवेशिक सांस्कृतिक संवाद के रूप में देखा गया है, किंतु व्यवसाय और श्रम-संस्कृति के विस्तृत सामाजिक अर्थों पर अपेक्षाकृत कम चर्चा हुई है।

(ख) सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से अध्ययन

कुछ इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने कंपनी चित्रों को औपनिवेशिक समाज के दृश्य दस्तावेज़ के रूप में देखने का प्रयास किया है। सी. ए. बेयली और थॉमस मेटकाफ जैसे विद्वानों ने औपनिवेशिक काल के व्यापारिक नेटवर्क, बाज़ार व्यवस्था और प्रशासनिक ढाँचे के अध्ययन में दृश्य स्रोतों के महत्व को रेखांकित किया। उनके अनुसार कंपनी चित्र केवल कलात्मक उत्पाद नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शासन द्वारा भारतीय समाज को समझने और वर्गीकृत करने का माध्यम भी थे। तथापि, इन अध्ययनों में चित्रों के आंतरिक सामाजिक-आर्थिक संकेतों की सूक्ष्म दृश्य-व्याख्या अपेक्षाकृत सीमित रही है।

(ग) पटना कलम पर विद्वत् अध्ययन

पटना कलम पर किए गए अध्ययनों में इसे कंपनी चित्रकला की एक विशिष्ट लोकजीवन-केन्द्रित शैली के रूप में स्थापित किया गया है। कुछ विद्वानों ने यह स्पष्ट किया है कि पटना के कलाकारों ने सामान्य जन, कारीगरों, छोटे व्यापारियों और बाज़ार दृश्यों को प्रमुखता से चित्रित किया। इन अध्ययनों में पटना कलम को एक प्रकार के "एथ्नोग्राफ़िक" दृश्य अभिलेख के रूप में देखा गया है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था और श्रम-वर्ग की गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करता है। हालाँकि, अधिकांश शोध पटना कलम को एक स्वतंत्र शैली के रूप में देखने तक सीमित रहे हैं और मुर्शिदाबाद के साथ उसके तुलनात्मक अध्ययन की कमी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

(घ) मुर्शिदाबाद चित्रशैली पर अध्ययन

मुर्शिदाबाद पर उपलब्ध साहित्य अपेक्षाकृत सीमित है और मुख्यतः दरबारी संस्कृति, नवाबी संरक्षण और रेशमी वस्त्र व्यापार पर केंद्रित रहा है। कुछ अध्ययनों में मुर्शिदाबाद को मुग़ल लघुचित्र परंपरा के उत्तराधिकारी केंद्र के रूप में देखा गया है, जहाँ कंपनी काल में यूरोपीय यथार्थवाद का समावेश हुआ। इन शोधों में व्यापार और व्यवसाय का उल्लेख प्रायः दरबारी वैभव और अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य के संदर्भ में मिलता है, किंतु दैनिक जीवन और श्रम-वर्ग के दृश्य निरूपण पर विस्तार से चर्चा कम हुई है।

(ङ) आलोचनात्मक दृष्टिकोण और शोध-अंतराल

आधुनिक विद्वानों ने कंपनी चित्रकला को औपनिवेशिक "निगरानी दृष्टि" (colonial gaze) के संदर्भ में भी विश्लेषित किया है। उनके अनुसार ये चित्र भारतीय समाज को यूरोपीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं और कई बार सामाजिक यथार्थ को सरलीकृत या वर्गीकृत रूप में दिखाते हैं। इसके साथ ही कुछ भारतीय विद्वानों ने यह तर्क भी प्रस्तुत किया है कि इन चित्रों में स्थानीय कलाकारों की सृजनशीलता और सामाजिक अनुभव भी परिलक्षित होते हैं, जिन्हें केवल औपनिवेशिक उपकरण मानकर नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि कंपनी चित्रकला पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, किंतु पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के चित्रण का संयुक्त और तुलनात्मक अध्ययन अभी भी एक महत्वपूर्ण शोध-अंतराल बना हुआ

है। विशेष रूप से दृश्य-विश्लेषण के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं की व्याख्या करने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं। प्रस्तुत शोध इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है और कंपनी चित्रकला को औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-आर्थिक इतिहास के एक महत्वपूर्ण दृश्य स्रोत के रूप में पुनः स्थापित करता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के चित्रण का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन कंपनी चित्रकला को केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि औपनिवेशिक काल की सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं के दृश्य स्रोत के रूप में समझने का प्रयास करता है। इस हेतु अनुसंधान-डिज़ाइन तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का रखा गया है।

(क) अनुसंधान-डिज़ाइन

यह शोध तुलनात्मक केस-स्टडी मॉडल पर आधारित है, जिसमें पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों को दो पृथक किंतु आपस में संबद्ध अध्ययन-क्षेत्रों के रूप में लिया गया है। दोनों केंद्रों की चित्रकृतियों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन से जुड़े विषयों का तुलनात्मक मूल्यांकन कर उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास किया गया है।

(ख) स्रोत-सामग्री

1. प्राथमिक स्रोत

1. पटना और मुर्शिदाबाद से संबंधित कंपनी चित्रकृतियाँ, जो सार्वजनिक संग्रहालयों, अभिलेखागारों और डिजिटल कलेक्शनों में उपलब्ध हैं।
2. चयनित चित्रों के शीर्षक, विषय-वस्तु, माध्यम, तिथि (जहाँ उपलब्ध) और दृश्य संरचना का अध्ययन।

2. द्वितीयक स्रोत

1. कंपनी चित्रकला, औपनिवेशिक भारत, व्यापार और सामाजिक इतिहास से संबंधित प्रकाशित पुस्तकें, शोध-पत्र और कैटलॉग।

2. औपनिवेशिक काल के व्यापारिक अभिलेख, यात्रा-वृत्तांत और ऐतिहासिक अध्ययन, जिनसे चित्रों के सामाजिक-आर्थिक संदर्भों की पुष्टि की जा सके।

(ग) नमूना-चयन

नमूना-चयन उद्देश्यपूर्ण पद्धति द्वारा किया गया है। इस अंतर्गत उन्हीं चित्रों का चयन किया गया है जिनमें—

- व्यवसाय, व्यापार, कारीगर समुदाय, बाज़ार, परिवहन अथवा दैनिक जीवन की गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से चित्रित हों।
- चित्र कंपनी काल (18वीं–19वीं शताब्दी) से संबंधित हों और पटना अथवा मुर्शिदाबाद केंद्र से जोड़े जा सकें।

(घ) विश्लेषण की विधियाँ

1. **दृश्य-विश्लेषण**

   चयनित चित्रों का अध्ययन उनकी विषय-वस्तु, रचना, आकृति-संरचना, रंग-प्रयोग और क्रियात्मक संकेतों के आधार पर किया गया है।

2. **आइकनोग्राफ़िक विश्लेषण**

   चित्रों में उपस्थित व्यवसायिक औज़ारों, वस्तुओं, वेशभूषा और गतिविधियों के प्रतीकात्मक अर्थों की व्याख्या की गई है।

3. **ऐतिहासिक-संदर्भात्मक विश्लेषण**

   चित्रों को उनके समकालीन सामाजिक, आर्थिक और औपनिवेशिक संदर्भों में रखकर समझने का प्रयास किया गया है।

4. **तुलनात्मक विश्लेषण**

   पटना और मुर्शिदाबाद के चित्रों के बीच विषय-चयन, प्रस्तुति-शैली और सामाजिक-आर्थिक संकेतों की तुलना की गई है, जिससे दोनों केंद्रों की विशिष्टताएँ स्पष्ट हो सकें।

(ङ) विश्वसनीयता और वैधता

शोध की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए दृश्य-स्रोतों को ऐतिहासिक दस्तावेज़ों और विद्वत् साहित्य से मिलान किया गया है। विभिन्न स्रोतों के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों का पारस्परिक सत्यापन किया गया है, जिससे अध्ययन की वैधता और निष्पक्षता बनी रहे।

(च) अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन उन्हीं चित्रकृतियों तक सीमित है जो सार्वजनिक संग्रहों या प्रकाशित स्रोतों में उपलब्ध हैं। निजी संग्रहों में सुरक्षित दुर्लभ कृतियाँ इस अध्ययन के दायरे से बाहर रह सकती हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ चित्रों का सटीक तिथिकरण और कलाकार-निर्धारण चुनौतीपूर्ण रहा है, जिसे संभाव्य ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर संबोधित किया गया है।

विश्लेषण एवं विवेचना

कंपनी चित्रकला के अंतर्गत निर्मित चित्र केवल कलात्मक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि वे औपनिवेशिक भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं का दृश्य साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन का चित्रण उनके भिन्न ऐतिहासिक, आर्थिक और संरक्षक परिवेश को प्रतिबिंबित करता है। इस खंड में दोनों केंद्रों की चित्रकला का पृथक-पृथक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए, उनके सामाजिक-आर्थिक निहितार्थों की विवेचना की गई है।

(क) पटना कलम में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन का चित्रण

पटना कलम की सबसे प्रमुख विशेषता इसका लोकजीवन-केन्द्रित दृष्टिकोण है। यहाँ निर्मित कंपनी चित्रों में सामान्य जन, कारीगर, छोटे व्यापारी और रोज़मर्रा की आर्थिक गतिविधियाँ केंद्रीय विषय के रूप में उभरती हैं। चित्रों में नाई, धोबी, बुनकर, बढ़ई, हलवाई, मछुआरे, नाविक और सड़क किनारे सेवाएँ प्रदान करने वाले पेशेवरों को उनके औज़ारों और कार्य-प्रक्रियाओं के साथ चित्रित किया गया है। यह चित्रण न केवल पेशों की पहचान कराता है, बल्कि उस समय के श्रम-विभाजन और स्थानीय अर्थव्यवस्था की संरचना को भी उजागर करता है।

पटना कलम के बाज़ार-दृश्यों में छोटे पैमाने के व्यापार का यथार्थवादी निरूपण मिलता है। फल-सब्ज़ी विक्रेताओं, चूड़ी बेचने वाली स्त्रियों, अनाज या कपड़े के व्यापारियों को ग्राहकों के साथ संवाद करते हुए दर्शाया गया है। इन दृश्यों में वस्तुओं की मात्रा, बिक्री की शैली और सामाजिक संपर्क के संकेत उस समय की सूक्ष्म आर्थिक प्रणाली को समझने में सहायक होते हैं। यह स्पष्ट होता है कि पटना की कंपनी चित्रकला स्थानीय उत्पादन और उपभोग पर आधारित अर्थव्यवस्था का दृश्य दस्तावेज़ प्रस्तुत करती है।

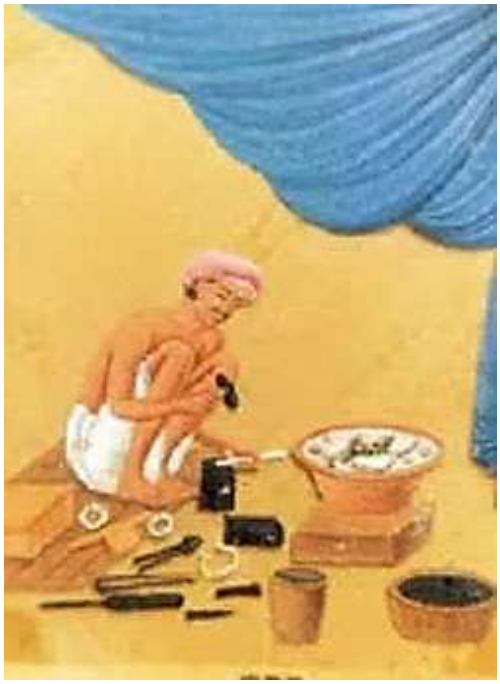

श्रम और दैनिक जीवन का प्रत्यक्ष दृश्य अभिलेख

(जलरंग, काग़ज़ पर; 19वीं शताब्दी, पटना स्कूल)

दैनिक जीवन के चित्रण में भी पटना कलम की वस्तुनिष्ठता विशेष उल्लेखनीय है। घरेलू गतिविधियाँ, सामाजिक अनुष्ठान, नदी-किनारे जीवन और परिवहन के साधन—विशेषतः गंगा नदी से जुड़ी नौवहन गतिविधियाँ—इन चित्रों में बार-बार दिखाई देती हैं। इन दृश्यों से यह स्पष्ट होता है कि नदी केवल भौगोलिक तत्व नहीं, बल्कि व्यापार और जीवन की धुरी थी। इस प्रकार पटना कलम के चित्र औपनिवेशिक काल के श्रमजीवी समाज और स्थानीय व्यापारिक संरचना का एक जीवंत दृश्य अभिलेख बन जाते हैं।

(ख) मुर्शिदाबाद चित्रशैली में व्यापार, व्यवसाय और सामाजिक जीवन

मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला का स्वरूप पटना कलम से भिन्न दिखाई देता है। अठारहवीं शताब्दी में नवाबी राजधानी और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक केंद्र होने के कारण यहाँ की चित्रकला में दरबारी संरक्षण और आर्थिक वैभव का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। मुर्शिदाबाद के चित्रों में व्यवसाय और व्यापार का चित्रण अधिक व्यापक, औपचारिक और अभिजात्य संदर्भ में किया गया है।

रेशमी वस्त्र उद्योग मुर्शिदाबाद की आर्थिक पहचान का प्रमुख आधार था, जिसका प्रतिबिंब कंपनी चित्रों में भी मिलता है। कताई-बुनाई, वस्त्रों का प्रदर्शन, व्यापारिक लेन-देन और यूरोपीय व्यापारियों की उपस्थिति जैसे दृश्य इस क्षेत्र की वैश्विक व्यापारिक भूमिका को रेखांकित करते हैं। इन चित्रों में व्यापार को केवल स्थानीय गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक नेटवर्क के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला में दैनिक जीवन का चित्रण अपेक्षाकृत अप्रत्यक्ष रूप में सामने आता है। यहाँ सामान्य जन और कारीगर प्रायः दरबारी या व्यापारिक दृश्यों की पृष्ठभूमि में दिखाई देते हैं—सेवकों, नौकरों या सहायक श्रमिकों के रूप में। यह प्रस्तुति सामाजिक वर्ग-विभाजन और सत्ता-संरचना को दर्शाती है, जहाँ आर्थिक संसाधनों और सामाजिक प्रतिष्ठा का केंद्रीकरण अभिजात्य वर्ग के हाथों में था।

मुर्शिदाबाद कंपनी चित्रकला में दरबारी जीवन और व्यापारिक वैभव *(जलरंग, काग़ज़ पर; 18वीं शताब्दी)*

शैलीगत दृष्टि से भी मुर्शिदाबाद की चित्रकला अधिक सजावटी और औपचारिक है। विस्तृत पृष्ठभूमियाँ, स्थापत्य, वस्त्रों का वैभव और रंगों की गहनता व्यापार और सत्ता के प्रदर्शन को सुदृढ़ करती है। इस प्रकार मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्र औपनिवेशिक भारत में व्यापारिक समृद्धि और दरबारी अर्थव्यवस्था का दृश्य प्रतिनिधित्व करते हैं।

(ग) विश्लेषणात्मक विवेचना

पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दोनों केंद्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन का चित्रण उनके सामाजिक-आर्थिक परिवेश से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित था। पटना कलम ने जहाँ स्थानीय श्रम, छोटे व्यवसाय और साधारण जनजीवन को प्राथमिकता दी, वहीं मुर्शिदाबाद की चित्रकला ने व्यापारिक वैभव, दरबारी संरचना और वैश्विक वाणिज्यिक संबंधों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया।

इन चित्रों के माध्यम से औपनिवेशिक भारत की दो भिन्न आर्थिक वास्तविकताएँ सामने आती हैं—एक ओर स्थानीय बाज़ार और श्रम-आधारित अर्थव्यवस्था, और दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा अभिजात्य संरक्षित अर्थव्यवस्था। इस प्रकार कंपनी चित्रकला न केवल कला-इतिहास का विषय बनती है, बल्कि औपनिवेशिक काल के सामाजिक-आर्थिक इतिहास को समझने का एक सशक्त दृश्य माध्यम भी सिद्ध होती है।

तुलनात्मक विवेचना

पटना और मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला का तुलनात्मक दृश्य —

बाईं ओर: पटना कलम (लोकजीवन एवं श्रम) | दाईं ओर: मुर्शिदाबाद (दरबारी एवं व्यापारिक वैभव)

पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों में व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यद्यपि दोनों ही केंद्र औपनिवेशिक संरक्षकता के अंतर्गत विकसित हुए, तथापि उनके चित्रण की विषय-वस्तु, दृष्टिकोण और सामाजिक-आर्थिक संकेतों में मौलिक भिन्नताएँ विद्यमान हैं। यह भिन्नता केवल शैलीगत न होकर, उन क्षेत्रों की ऐतिहासिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से गहराई से जुड़ी हुई है।

पटना कलम की कंपनी चित्रकला का मूल स्वर लोकजीवन और श्रम-आधारित अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। यहाँ व्यवसाय और व्यापार का चित्रण छोटे पैमाने पर संचालित गतिविधियों के रूप में सामने आता है। कारीगर, छोटे व्यापारी, फेरीवाले, नाविक और सेवा-आधारित पेशे इन चित्रों के केंद्रीय पात्र हैं। इन दृश्यों में व्यक्ति और उसकी क्रिया को प्रमुखता दी गई है, जबकि पृष्ठभूमि और स्थापत्य तत्व न्यूनतम या अनुपस्थित रहते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पटना कलम का उद्देश्य सौंदर्यात्मक भव्यता से अधिक सामाजिक यथार्थ और आर्थिक गतिविधियों का प्रत्यक्ष दृश्यांकन करना था।

इसके विपरीत, मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला में व्यवसाय और व्यापार का निरूपण अधिक संगठित, औपचारिक और अभिजात्य संदर्भ में किया गया है। यहाँ व्यापार मुख्यतः रेशमी वस्त्र उद्योग, दरबारी संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक नेटवर्क से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। चित्रों में व्यापारी गतिविधियाँ प्रायः दरबार, महलों, गोदामों या नदी-तटों की विस्तृत पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत की गई हैं। इससे व्यापार केवल आर्थिक क्रिया न रहकर, सत्ता, प्रतिष्ठा और सामाजिक वर्गीकरण का प्रतीक बन जाता है।

दैनिक जीवन के चित्रण में भी दोनों केंद्रों के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। पटना कलम में दैनिक जीवन सीधे और वस्तुनिष्ठ रूप में सामने आता है—घरेलू कार्य, बाज़ार लेन-देन, श्रम की प्रक्रिया और सामुदायिक गतिविधियाँ बिना किसी अलंकरण के चित्रित होती हैं। इसके विपरीत, मुर्शिदाबाद की चित्रकला में दैनिक जीवन अप्रत्यक्ष रूप से, दरबारी या व्यापारिक दृश्यों की पृष्ठभूमि में उपस्थित रहता है। यहाँ सामान्य जन और श्रमिक वर्ग प्रायः सहायक या सेवक के रूप में दिखाई देते हैं, जिससे सामाजिक वर्ग-भेद और सत्ता-संरचना का संकेत मिलता है।

शैलीगत दृष्टि से भी यह अंतर महत्वपूर्ण है। पटना कलम की सरल रेखाएँ, सीमित रंग-योजना और क्रिया-केंद्रित संरचना स्थानीय बाज़ार और श्रम-संस्कृति की सादगी को प्रतिबिंबित करती हैं। वहीं मुर्शिदाबाद की चित्रशैली में रंगों की गहनता, सजावटी वस्त्र, स्थापत्य पृष्ठभूमि और आंशिक यूरोपीय परिप्रेक्ष्य का प्रयोग व्यापारिक वैभव और अभिजात्य संस्कृति को सुदृढ़ करता है।

इस तुलनात्मक विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि कंपनी चित्रकला को एक समान औपनिवेशिक उत्पाद के रूप में देखना अपर्याप्त होगा। पटना और मुर्शिदाबाद के चित्र यह दर्शाते हैं कि औपनिवेशिक संरक्षकता के भीतर भी स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों ने चित्रकला की विषय-वस्तु और दृष्टि को निर्णायक रूप से आकार दिया। एक ओर पटना कलम स्थानीय श्रम, छोटे व्यवसाय और जनजीवन की दृश्य-इतिहास प्रस्तुत करती है, वहीं दूसरी ओर मुर्शिदाबाद की चित्रकला व्यापारिक वैभव, दरबारी अर्थव्यवस्था और वैश्विक वाणिज्यिक संबंधों का प्रतिनिधित्व करती है।

इस प्रकार दोनों केंद्रों की कंपनी चित्रकला मिलकर औपनिवेशिक भारत की बहुस्तरीय आर्थिक संरचना—स्थानीय बाज़ार से लेकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार तक—का समग्र दृश्य परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है। यही तुलनात्मक दृष्टि इस शोध को कला-इतिहास के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक इतिहास के अध्ययन के लिए भी विशेष रूप से प्रासंगिक बनाती है।

II. निष्कर्ष

कंपनी चित्रकला में औपनिवेशिक भारत का दैनिक जीवन — दृश्य इतिहास के रूप में चित्रकला

कंपनी चित्रकला भारतीय कला इतिहास का एक ऐसा महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें औपनिवेशिक सत्ता, स्थानीय समाज और कलात्मक परंपराओं का जटिल अंतर्संबंध स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के संक्रमणकाल में विकसित इस चित्रण-परंपरा ने भारतीय समाज के व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन को न केवल दृश्य रूप प्रदान किया, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में भी संरक्षित किया। इस शोध-पत्र के माध्यम से पटना और मुर्शिदाबाद के कंपनी चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्थापित करता है कि ये चित्र

औपनिवेशिक भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं को समझने के लिए एक सशक्त दृश्य स्रोत हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि पटना कलम की कंपनी चित्रकला मुख्यतः स्थानीय और श्रम-आधारित अर्थव्यवस्था पर केंद्रित रही। इसमें छोटे व्यवसाय, कारीगर समुदाय, बाज़ार गतिविधियाँ और साधारण जनजीवन को प्रत्यक्ष, सरल और वस्तुनिष्ठ ढंग से चित्रित किया गया। इन चित्रों में व्यक्ति और उसकी क्रिया को प्राथमिकता दी गई, जिससे स्थानीय उत्पादन, विनिमय और श्रम-संस्कृति का सजीव दृश्यांकन संभव हुआ। इस दृष्टि से पटना कलम को औपनिवेशिक भारत के श्रमजीवी समाज और स्थानीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण दृश्य अभिलेख माना जा सकता है।

इसके विपरीत, मुर्शिदाबाद की कंपनी चित्रकला में व्यवसाय और व्यापार का चित्रण अधिक संगठित, औपचारिक और अभिजात्य संदर्भ में दिखाई देता है। रेशमी वस्त्र उद्योग, दरबारी संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक नेटवर्क इस चित्रशैली के प्रमुख विषय रहे। यहाँ दैनिक जीवन का निरूपण अप्रत्यक्ष रूप में उपस्थित है और सामान्य जन अथवा श्रमिक वर्ग प्रायः दरबारी अथवा व्यापारिक दृश्यों की पृष्ठभूमि में दिखाई देते हैं। यह प्रस्तुति सामाजिक वर्ग-विभाजन, सत्ता-संरचना और आर्थिक केंद्रीकरण की ओर संकेत करती है।

तुलनात्मक विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि कंपनी चित्रकला को एक समान औपनिवेशिक उत्पाद के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। पटना और मुर्शिदाबाद के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, व्यापारिक संरचनाएँ और संरक्षकता की प्रकृति ने चित्रों की विषय-वस्तु और दृश्य भाषा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। एक ओर पटना कलम स्थानीय बाज़ार और श्रम-संस्कृति का दृश्य इतिहास प्रस्तुत करती है, वहीं दूसरी ओर मुर्शिदाबाद की चित्रकला व्यापारिक वैभव और वैश्विक वाणिज्यिक संपर्कों का प्रतिनिधित्व करती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कंपनी चित्रकला केवल एक कलात्मक धारा नहीं, बल्कि औपनिवेशिक भारत के सामाजिक-आर्थिक जीवन का दर्पण है। व्यवसाय, व्यापार और दैनिक जीवन के चित्रण के माध्यम से ये चित्र उस युग की आर्थिक गतिविधियों, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक संरचनाओं को समझने में सहायक होते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत शोध न केवल कंपनी चित्रकला के अध्ययन को समृद्ध करता है, बल्कि भारतीय सामाजिक-आर्थिक इतिहास के अध्ययन में दृश्य स्रोतों की प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है।

III. संदर्भ

(क) पुस्तकें

1. आर्चर, मिल्ड्रेड. (1992).
   कंपनी पेंटिंग्स: ब्रिटिश काल की भारतीय चित्रकला.
   लंदन: विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूज़ियम।
2. आर्चर, डब्ल्यू. जी. (1959).
   पंजाब पहाड़ी क्षेत्र की भारतीय चित्रकला.
   लंदन: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. बेयली, सी. ए. (1983).
   शासक, नगरवासी और बाज़ार: ब्रिटिश विस्तार के युग में उत्तर भारतीय समाज.
   कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. बेयली, सी. ए. (1998).
   दक्षिण एशिया में राष्ट्रीयता की उत्पत्ति: आधुनिक भारत के निर्माण में देशभक्ति और नैतिक शासन.
   नई दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. डैलरिम्पल, विलियम. (2019).
   द एनार्की: ईस्ट इंडिया कंपनी का निरंतर और आक्रामक उदय.
   लंदन: ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग।
6. गुहा-ठाकुरता, तपती. (1992).
   एक 'नवीन भारतीय कला' का निर्माण: कलाकार, सौंदर्यशास्त्र और राष्ट्रवाद (1850–1920).
   कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. लॉस्टी, जे. पी. (1990).
   भारत में पुस्तक-कला की परंपरा.
   लंदन: ब्रिटिश लाइब्रेरी।
8. मित्तर, पार्थ. (1992).
   औपनिवेशिक भारत में कला और राष्ट्रवाद (1850–1922): पाश्चात्य उन्मुखताएँ.
   कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

9. रॉय, तीर्थंकर. (2012).
विश्व अर्थव्यवस्था में भारत: प्राचीन काल से वर्तमान तक.
कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

(ख) शोध-पत्र एवं आलेख

10. चैटर्जी, पार्थ. (2008).
"कंपनी चित्रकला में दैनिक जीवन का चित्रण: पटना कलम का एथ्नोग्राफ़िक महत्व।"
इंडियन आर्ट जर्नल, खंड 34, अंक 2, पृ. 67–92।
11. गुहा-ठाकुरता, तपती. (2004).
"औपनिवेशिक भारत की दृश्य संस्कृति।"
साउथ एशियन स्टडीज़, खंड 20, अंक 1, पृ. 21–45।
12. मेटकाफ, थॉमस आर. (1995).
राज की विचारधाराएँ.
कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. नायर, जनकी. (2010).
"कंपनी स्कूल पेंटिंग और औपनिवेशिक आधुनिकता की दृश्य संस्कृति।"
मॉडर्न एशियन स्टडीज़, खंड 44, अंक 3, पृ. 543–572।
14. सिंह, कविता. (2001).
"अठारहवीं शताब्दी में मुर्शिदाबाद और उसकी कलात्मक विरासत।"
जर्नल ऑफ़ बंगाल आर्ट, खंड 6, अंक 1, पृ. 101–128।

(ग) ऑनलाइन स्रोत

15. मैप अकादमी. (तिथि अनुपलब्ध).
कंपनी चित्रकला.
उपलब्ध स्रोत: https://mapacademy.io
16. सहपीडिया. (तिथि अनुपलब्ध).
कंपनी स्कूल चित्रकला.
उपलब्ध स्रोत: https://www.sahapedia.org

17. द हेरिटेज लैब. (तिथि अनुपलब्ध).

कंपनी स्कूल पेंटिंग्स: एक दृश्य अभिलेख.

उपलब्ध स्रोत: https://www.theheritagelab.in

(घ) संग्रहालय एवं अभिलेखागार

18. ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन —

भारत में निर्मित कंपनी चित्रों का संग्रह।

19. विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूज़ियम, लंदन —

दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशियाई कंपनी चित्रकला संग्रह।

20. इंडियन म्यूज़ियम, कोलकाता —

मुर्शिदाबाद चित्रकला संग्रह।

21. पटना म्यूज़ियम, पटना —

पटना कलम चित्रकला संग्रह।

22. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली —

कंपनी स्कूल चित्रकला संग्रह।